IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 13, May 2026
Impact Factor: 8.2

माताओं की रोजगार स्थिति का बच्चों के आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान पर प्रभाव

डॉली कुमारी[1] and डॉ. विकेश चंद्र गुप्ता[2]

[1]शोधार्थी, मनोविज्ञान-विभाग

[2]प्रोफेसर, मनोविज्ञान-विभाग

विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.), भारत

सारांश

वर्तमान समय में महिलाओं की कार्यभागीदारी में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप पारिवारिक संरचना एवं बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माताओं की रोजगार स्थिति का बच्चों के आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान पर प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि कार्यरत एवं गैर-कार्यरत माताओं के बच्चों के आत्मविश्वास और आत्मसम्मान में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से ज्ञात होता है कि माताओं का रोजगार स्वयं बच्चों के विकास का एकमात्र निर्धारक नहीं है, बल्कि मातृ शिक्षा, पारिवारिक वातावरण, पालन-पोषण शैली, भावनात्मक समर्थन तथा माता द्वारा बच्चों के साथ बिताया गया गुणवत्तापूर्ण समय अधिक प्रभावशाली कारक होते हैं।

मुख्य संकेतक: - कार्यरत माताएँ, गैर-कार्यरत माताएँ, पारिवारिक वातावरण, पालन-पोषण, मातृ रोजगार, मनोवैज्ञानिक विकास ।

परिचय

बालक का व्यक्तित्व निर्माण परिवार में प्रारम्भ होता है तथा माता उसकी प्रथम शिक्षिका होती है। बच्चों के आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान के विकास में माता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। वर्तमान

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 13, May 2026 Impact Factor: 8.2

सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के कारण बड़ी संख्या में महिलाएँ रोजगार से जुड़ रही हैं। इससे बच्चों के पालन-पोषण की पारंपरिक व्यवस्था में परिवर्तन आया है। एक ओर कार्यरत माताएँ बच्चों के लिए आर्थिक संसाधनों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा बेहतर जीवन-स्तर उपलब्ध कराती हैं, वहीं दूसरी ओर समय की कमी बच्चों के भावनात्मक विकास को प्रभावित कर सकती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आत्मविश्वास वह मानसिक अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखता है, जबकि आत्मसम्मान व्यक्ति द्वारा स्वयं के प्रति विकसित सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन को व्यक्त करता है। जिन बच्चों को माता-पिता से पर्याप्त भावनात्मक सहयोग, प्रोत्साहन तथा स्वीकृति प्राप्त होती है, उनमें आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान अधिक विकसित होता है। दूसरी ओर उपेक्षा, संवादहीनता अथवा अत्यधिक नियंत्रण बच्चों में हीन भावना तथा कम आत्मसम्मान उत्पन्न कर सकता है।

आधुनिक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हुआ है कि मातृ रोजगार का प्रभाव एकरूप नहीं होता। यदि कार्यरत माता संतुलित पारिवारिक जीवन बनाए रखती है तो उसके बच्चों में नेतृत्व क्षमता, निर्णय क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक दक्षता अधिक विकसित होती है। वहीं, अत्यधिक कार्यभार या पारिवारिक तनाव की स्थिति में बच्चों का आत्मविश्वास प्रभावित हो सकता है। इसलिए मातृ रोजगार की गुणवत्ता तथा पारिवारिक समर्थन प्रणाली दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

साहित्य समीक्षा

पटेल और सिंह (2017) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि कार्यरत एवं गैर-कार्यरत माताओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय अंतर नहीं था, किंतु शैक्षिक समायोजन में अंतर पाया गया।

विक्रम, चेन और देसाई (2018) ने भारत मानव विकास सर्वेक्षण के आधार पर बताया कि माताओं के रोजगार का प्रभाव उनकी शिक्षा, कार्य के प्रकार तथा बच्चों के साथ बिताए गए समय पर निर्भर करता है।

यंगब्लेड एवं सहयोगियों (2020) ने पाया कि कार्यरत माताओं के बच्चों में आत्मसम्मान, पारिवारिक संगठन एवं आत्मनिर्भरता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक था।

रोसेनबर्ग (2018) के अनुसार आत्मसम्मान व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास का केंद्रीय घटक है तथा इसका निर्माण पारिवारिक संबंधों से प्रारंभ होता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 13, May 2026 Impact Factor: 8.2

बन्दुरा (2010) ने आत्म-प्रभावकारिता सिद्धांत के माध्यम से स्पष्ट किया कि बच्चों का आत्मविश्वास सामाजिक अधिगम एवं सकारात्मक अनुभवों से विकसित होता है।

बॉमरिंड (2015) ने बताया कि लोकतांत्रिक पालन-पोषण शैली बच्चों में आत्मविश्वास एवं उच्च आत्मसम्मान विकसित करती है।

ब्रोंफेनब्रेनर (2016) के पारिस्थितिकीय सिद्धांत के अनुसार परिवार, विद्यालय तथा सामाजिक वातावरण मिलकर बाल विकास को प्रभावित करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कार्यरत एवं गैर-कार्यरत माताओं के बच्चों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
2. दोनों समूहों के बच्चों के आत्मसम्मान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माताओं की रोजगार स्थिति एवं बच्चों के आत्मविश्वास के मध्य संबंध ज्ञात करना।
4. मातृ रोजगार एवं आत्मसम्मान पर पारिवारिक वातावरण की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. कार्यरत एवं गैर-कार्यरत माताओं के बच्चों के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर होगा।
2. दोनों समूहों के बच्चों के आत्मसम्मान में सार्थक अंतर होगा।
3. मातृ रोजगार स्थिति एवं बच्चों के आत्मविश्वास के मध्य धनात्मक संबंध होगा।
4. पारिवारिक वातावरण आत्मसम्मान को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करेगा।

शोध विधि

1. **शोध प्रकार:** वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक
2. **नमूना:** 200 विद्यार्थी (100 कार्यरत माताओं के, 100 गैर-कार्यरत माताओं के)
3. **निदर्शन विधि:** स्तरीकृत यादृच्छिक निदर्शन
4. **उपकरण:** आत्मविश्वास मापनी, रोसेनबर्ग आत्मसम्मान मापनी, पारिवारिक वातावरण प्रश्नावली
5. **सांख्यिकीय तकनीक:** Mean, SD, t-test, Pearson Correlation

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 13, May 2026 Impact Factor: 8.2

परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कार्यरत माताओं के बच्चों में आत्मनिर्भरता, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। इसका मुख्य कारण माताओं द्वारा बच्चों को उत्तरदायित्व सौंपना, स्वतंत्र निर्णय लेने के अवसर प्रदान करना तथा आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता है।

दूसरी ओर, गैर-कार्यरत माताओं के बच्चों को अधिक प्रत्यक्ष भावनात्मक सहयोग प्राप्त होने के कारण उनमें भावनात्मक सुरक्षा अधिक पाई गई। हालांकि यदि कार्यरत माताएँ गुणवत्तापूर्ण समय देती हैं, तो बच्चों के आत्मसम्मान पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध यह भी दर्शाता है कि केवल मातृ रोजगार ही निर्णायक कारक नहीं है। मातृ शिक्षा, पारिवारिक वातावरण, पिता की सहभागिता तथा पालन-पोषण शैली बच्चों के आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान को अधिक प्रभावित करते हैं। इसलिए रोजगार की स्थिति की अपेक्षा पालन-पोषण की गुणवत्ता अधिक महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि माताओं की रोजगार स्थिति बच्चों के आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान को प्रभावित अवश्य करती है, परन्तु इसका प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं बल्कि पारिवारिक वातावरण, भावनात्मक सहयोग, मातृ शिक्षा, आर्थिक स्थिति तथा पालन-पोषण शैली के माध्यम से प्रकट होता है। कार्यरत माताएँ यदि बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताती हैं तथा सकारात्मक पारिवारिक वातावरण बनाए रखती हैं, तो उनके बच्चों में उच्च आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान विकसित होता है। अतः परिवार, विद्यालय तथा समाज को मिलकर ऐसी परिस्थितियाँ विकसित करनी चाहिए जिनसे कार्यरत एवं गैर-कार्यरत दोनों प्रकार की माताएँ बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकें।

संदर्भ सूची

1. बंडुरा, ए. (2010). आत्म-प्रभावकारिता: नियंत्रण का अभ्यास। डब्ल्यू.एच. फ्रीमैन।
2. बाउम्रिंड, डी. (2015). पालन-पोषण शैली का किशोरों की क्षमता और मादक पदार्थों के सेवन पर प्रभाव। जर्नल ऑफ अर्ली एडोलसेंस, 11(1), 56–95।
3. बर्क, एल.ई. (2018). जीवनकाल के दौरान विकास (सातवां संस्करण)। पियर्सन।
4. बोर्नस्टीन, एम.एच. (2015). पालन-पोषण की हैंडबुक (द्वितीय संस्करण)। रूटलेज।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 13, May 2026
Impact Factor: 8.2

5. ब्रोनफेनब्रेनर, यू. (2016). मानव विकास की पारिस्थितिकी। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. एक्लेस, जे.एस., और रोसर, आर.डब्ल्यू. (2011). विकासात्मक संदर्भ के रूप में विद्यालय। जर्नल ऑफ रिसर्च ऑन एडोलसेंस, 21(1), 225–241।
7. हार्टर, एस. (2012). द कंस्ट्रक्शन ऑफ द सेल्फ. गिलफोर्ड प्रेस.
8. मैकोबी, ई. ई. (2013). द टू सेक्सेस: ग्रोइंग अप अपार्ट. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. पपलिया, डी. ई., और फेल्डमैन, आर. डी. (2017). ह्यूमन डेवलपमेंट (13वां संस्करण). मैकग्रा-हिल.
10. पटेल, एच., और सिंह, वी. (2017). माताओं की कामकाजी स्थिति के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और समायोजन का अध्ययन. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 43(1), 39–49.
11. रोसेनबर्ग, एम. (2018). सोसाइटी एंड द एडोलसेंट सेल्फ-इमेज. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
12. सैंट्रॉक, जे. डब्ल्यू. (2019). लाइफ-स्पैन डेवलपमेंट (17वां संस्करण). मैकग्रा-हिल.
13. सेगिनर, आर. (2006). माता-पिता की शैक्षिक भागीदारी। स्प्रिंगर।
14. शेफ़र, डी. आर., और किप, के. (2014). विकासात्मक मनोविज्ञान। सेंगेज लर्निंग।
15. स्टेनबर्ग, एल. (2017). एडोलसेंस (11वां संस्करण). मैकग्रा-हिल.
16. विक्रम, के., चेन, एफ., और देसाई, एस. (2018). माताओं के काम के तरीके और बच्चों की संज्ञानात्मक उपलब्धि: इंडिया ह्यूमन डेवलपमेंट सर्वे से प्रमाण. सोशल साइंस रिसर्च, 72, 207–224.
17. वूलफोक, ए. (2019). एजुकेशनल साइकोलॉजी (14वां संस्करण). पियर्सन.
18. यंगब्लेड, एल. एम., ज़स्लो, एम. जे., और हान, डब्ल्यू. जे. (2020). सिंगल-पेरेंट परिवारों में माँ के काम करने की स्थिति का बच्चों की खुद और परिवार के बारे में सोच पर असर. जर्नल ऑफ़ एक्सपेरिमेंटल चाइल्ड साइकोलॉजी, 54(3), 417–433.
19. ज़ैंडेन, जे. डब्ल्यू. वी. (2016). ह्यूमन डेवलपमेंट. मैकग्रा-हिल.
20. ज़िमरमैन, बी. जे. (2000). सेल्फ-एफिकेसी: सीखने के लिए एक ज़रूरी प्रेरणा. कंटेंपरेरी एजुकेशनल साइकोलॉजी, 25(1), 82–91.